शोध मंथन Vol. XII No.III July-Sep. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

मानव सौन्दर्य ''छायावादी काव्य और उपन्यास में तुलनात्मक अध्ययन के रूप में''

डॉ० निशा गोयल
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मेरठ
ईमेलः *nishagoel10@gmail.com*

प्राप्तिः 28.09.2021
स्वीकृतः 10.09.2021

सारांश

मानव–सौन्दर्य सृष्टि की एक महत्वपूर्ण ईकाई है। मानव–सौन्दर्य दर्शन की लालसा इतनी अधिक बलवती होती है कि नव वधूरी के चन्द्र मुख दर्शन के रसास्वादन हेतु नर–नारियाँ अपने–अपने घरों से भागे चले आते हैं। छायावादी कविता और उपन्यास में नर–नारी एवं शिशु वर्ग सभी की सुन्दरता अपने–अपने क्षेत्र में निराली है। बाल–सौन्दर्य एक ऐसा मनमोहक सौन्दर्य होता है जो सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है। नारी–सौन्दर्य विधाता की अनुपम परिकल्पना है। नर उसके सौन्दर्य से प्रभावित होकर आत्मसात् हेतु व्याकुल हो उठता है। छायावादी उपन्यास व कविता में उक्त सौन्दर्य समुचित रूप में देखने को मिलते हैं। मानव–सौन्दर्य विधाता की अति महत्वपूर्ण रचना मानी गयी है। छायावादी काव्य और उपन्यास में मानव–सौन्दर्य का तुलनात्मक अध्ययन अनेक रूपों में चित्रित किया गया है।

नारी सौन्दर्य

नारी प्रकृति की अति सुकुमार रचना है। सौन्दर्य के क्षेत्र में सृष्टि ने उसे चरमोंत्कर्षमय रूप प्रदान किया है। छायावादी कविता में नारी के सौन्दर्य का खुलकर चित्रण किया गया है। छायावादी कवि नारी के सूक्ष्म–सौन्दर्य में अधिक रमा है, यदि दृष्टि डाली जाये तो पता चलता है कि छायावादी सौन्दर्य में स्थूल–सौन्दर्य की भी कमी नहीं है। जहाँ तक उपन्यास साहित्य का प्रश्न है, इसमें भी नारी–सौन्दर्य के चित्रों को चरमोंत्कर्ष रूप प्रदान किया गया है। छायावादी कविता एवं उपन्यासों में नारी सौन्दर्य अधिकांशतः एक जैसा ही बन पड़ा है।

महाकवि प्रसाद नारी–सौन्दर्य के चित्रण में अधिक रमे हैं। 'आँसू' काव्यकृति एक ओर नारी के सूक्ष्म–सौन्दर्य को चित्रित करती है वहीं दूसरी ओर चन्द्रमुखी नायिका के उरोजों के स्थूल सौन्दर्य के चित्रण करने से भी नहीं चूकती –**''शशि–मुख पर घूँघट डाले अंचल में दीप छिपाये जीवन की गोधूली में कौतूहल से तुम आये।''**[1]

छायावादी कवि नारी के परदा प्रथा से सम्बन्धित घूँघट में निहित सौन्दर्य से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। महाकवि प्रसाद घूँघट में निहित झलकते हुये सौन्दर्य के सरस पारखी थे। आपने चन्द्रमुखी नारी की घूँघट से प्रस्फुटित होती हुयी चितवन के सौन्दर्य को चित्रित करने में चार चाँद लगा दिये हैं –

''लतिका घूँघट से चितवन की

वह कुसुम दुग्ध–सी मधु धारा,
प्लावित करती मन अर्जिर रही,
या तुच्छ विश्व वैभव सारा।''[2]

प्रसाद जी का विचार है कि नारी के चन्द्रमुख का प्रभावशाली सौन्दर्य घूँघट की ओट में भी कभी छिप नहीं सकता –

''घूँघट की ओट में छिपा है भला कैसे कभी,
फूटकर निखर बिखरता जो रूप है।''[3]

छायावादी उक्त कविताओं में घूँघट में निहित जिस सौन्दर्य को प्रकीर्ण होते दिखाया गया है। वही सौन्दर्य छायावादी उपन्यासकारों ने भी अपने उपन्यास साहित्य में उसी रूप में प्रस्तुत किया है –

''इस एकान्त में भी घूँघट उसके मुख पर पड़ा था। भगवती ने प्रेम–भरी चितवन से अपनी नवोढ़ा स्त्री को देखते हुए कहा, 'ऊपर का चाँद तो निकल आया, नीचे का बादलों में ही छिपा रहेगा?''[4]

अनेक काव्यशास्त्रियों विचारकों का विचार है कि आभूषणों को धारण करने के बाद नारी–सौन्दर्य में और अधिक वृद्धि हो जाती है। आचार्य केशव तो आभूषण रहित नारी को यह कहकर ''भूषण बिनु न विराजहिं, कविता वनिता मित्र'' स्पष्ट कर देते हैं कि आभूषणों के बिना नारी सुशोभित ही नहीं होती है। छायावादी कवियों ने भी आभूषण धारण करने वाली नायिकाओं के सौन्दर्य को प्रस्तुत किया है –

''कण–कण कर कंकण, प्रिय
किण–किण ख किंकिणी,
खन वणन नूपुर, उरलाज,
लौट रंकिणी,
और मुखर पायल स्वर करें बार–बार,
प्रिय–पथ पर चलती, सब कहते शृंगार।''[5]

आभूशण के सौन्दर्य को उक्त कविता की ही भाँति निराला जी ने अपने
उपन्यास–साहित्य में भी प्रस्तुत किया है –

''दासियाँ प्रभावति को सजाने लगीं। प्रति अंग नीलमों, हीरों और मोतियों से जगमग हो गया। नगर–गुच्छ की श्रुति मधुर रणन निश्चेतन कारागृह में प्राणों से प्लुत नवीन जीवन का संचार करने लगी।''[6]

महाकवि प्रसाद ने अपनी कविता में नारी के अधखुले वक्षस्थल के सौन्दर्य को जिस प्रकार चित्रित किया है वह निश्चित ही आकर्षक बन पड़ा है –

''नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग
खिला हो ज्यों बिजली का फूल

मेघ–बन बीच गुलाबी रंग।''[7]

छायावादी सुप्रसिद्ध उपन्यास 'भिखारिणी' में नारी का जो सौन्दर्य प्रस्तुत किया गया है। वह उक्त कविता के सौन्दर्य से शत् प्रतिशत् रूप से तुलनीय होता है –

''–––वक्षस्थल का भी कुछ भाग खुला हुआ था। वह एक दिव्य मूर्ति मालूम होती थी।'' [8]

छायावादी कविता में नारी के चुलबुले कायिक सौन्दर्य की तुलना आकाश में चमचमाती हुई बिजली से की गयी है। उपन्यास–साहित्य में भी नारी के बिजली के समान चंचल सौन्दर्य को कविता की ही भाँति प्रस्तुत किया गया है। दोनों के उदाहरण उल्लेखनीय हैं।

कविता में नारी–सौन्दर्य –

''घन में सुन्दर बिजली–सी
बिजली में चपल चमक–सी
आँखों में काली पुतली
पुतली में श्याम झलक–सी।''[9]

उपन्यास साहित्य में नारी–सौन्दर्य –''जस्सो ने हरिणी की भाँति कुलांच भरी और क्षणमात्र में न जाने कहाँ अदृश्य हो गयी। ऐसा प्रतीत हुआ मानो बिजली कौंध गई।'' [10]

नारी के घुँघराने बाल एवं कपोल आदि अंगों का सौन्दर्य कवियों और उपन्यासकार दोनों ने एक जैसा ही प्रस्तुत किया है। महाकवि प्रसाद घुँघराले बालों के सौन्दर्य से अधिक प्रभावित है। आपने अपने काव्य में इनका खुलकर वर्णन किया है –

''घिर रहे थे घुँघराले बाल
अंश अवलम्बित मुख के पास''[11]

''बाँधा था विधु को किसने
इन काली जंजीरों से
मणि फणियों का मुख
क्यों भरा हुआ हीरों से।''[12]

प्रसाद जी ने अपनी कविताओं की ही भाँति अपने उपन्यासों में भी नारी सौन्दर्य के घुँघराले बालों का सौन्दर्य प्रस्तुत किया है –

''घने काले बालों के गुच्छे दोनों कानों के पास कन्धों पर लटक रहे थे। बायें कपोल पर एक तिल उसके सरल सौन्दर्य को बाँका बनाने के लिए पर्याप्त था।[13]

छायावादी उपन्यासकार निराला जी ने भी अपने उपन्यासों में नारी के लम्बे बालों के सौन्दर्य को कविता की भाँति प्रस्तुत किया है –

''लम्बे बाल कानों को ढककर कपोलों तक आ जाते हैं। गोरे चेहरे पर केवल साबुन से धुले सुनहरे बाल किसी मनुश्य को एक बार देखने के लिए खींच लेंगे। मुख और बालों की ऐसी मैत्री है।''[14]

छायावादी कवयित्री सुश्री महादेवी वर्मा ने अपनी कविता में उपन्यास–साहित्य की ही तरह नारी के घुँघराले बालों के सौन्दर्य का वर्णन किया है –

''रूपसि तेरा घन–केश–पाश!
श्यामल श्यामल कोमल कोमल
लहराता सुरभित केश–पास।।''[15]

छायावादी कविता में नारी के हंसमुख सौन्दर्य की छवि को जिस रूप में प्रस्तुत किया है ठीक उसी प्रकार उपन्यास–साहित्य में हंसमुख सौन्दर्य को प्रस्तुत किया गया है। प्रसाद जी नारी के इस रूप सौन्दर्य के पारखी जान पड़ते हैं –

विकल खिलखिलाती है क्यों तू?
इतनी हँसी न व्यर्थ बिखेर।।''[16]
और उस मुख पर वह मुस्कान!
रक्त किसलय पर ले विश्राम
अरूण की एक किरण अप्लान
अधिक अलसाई हो अभिराम।''[17]

उपन्यास–साहित्य में नारी–सौन्दर्य कविता की ही भाँति सटीक रूप में प्रस्तुत किया गया है –

''जब वह हँसती है तो खिलखिल फूल–सी हँसी हँसती है, तब वह कुछ भी और नहीं लगती चमेली के फूल–सी मासूम लगती है।''[18]

नारी के यौवनपूर्ण सौन्दर्य को छायावादी, कविता के माध्यम से अति सरस व आकर्षण रूप में प्रस्तुत किया गया है। महाकवि पन्त बालिका के सौन्दर्य में स्वर्गीयक सौन्दर्य की परिकल्पना करते हैं –

''कपोलों में उर के मृदु भाव
श्रवण नयनों में प्रिय बर्ताव
एक कलिका में अखिल बसन्त
धरा में थीं तुम स्वर्ग पुनीत।''[18]

नायिका के वासान्ती अनुपम सौन्दर्य को महादेवी वर्मा ने अति कुशलता के साथ चित्रित किया है। इस सौन्दर्य में स्थूल सौन्दर्य को महत्व न देकर आपने निशा–नायिका के यौवनत्व से परिपूर्ण सौन्दर्य का वर्णन किया है –

''सिहर सिहर उठता सरिता–उर
खुल–खुल पड़ते सुमन सुधा–भट,
मचल मचल आते पल फिर फिर,
सुन प्रिय की पद चाप गई
पुलकित यह अवनी।
सिहरती आ वसन्त–रजनी।''[20]

उपन्यास–साहित्य में भी नारी के यौवनत्व से परिपूर्ण सौन्दर्य को कविता की ही भाँति प्रस्तुत किया गया है। श्री विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक का ''भिखारिणी'' नमक उपन्यास इसका साक्षी है –

''जस्सो पर पूर्ण यौवन की छठा विधमान थी। अच्छा खाना, अच्छा कपड़ा मिलने तथा निश्चिन्तता का जीवन व्यतीत करने से उसका शरीर भी पुष्ट हो चला था, शरीर का वर्ण भी पहले की अपेक्षा अधिक गोरा हो गया था, मुख पर कान्ति विराजमान थी, गालों पर हल्की सुर्खी आ चली थी।''[21]

सुप्रसिद्ध उपन्यास कार श्री भगवती चरण वर्मा ने अपने उपन्यास ''चित्रलेखा'' में नारी यौवन से परिपूर्ण सौन्दर्य को कविता की ही भाँति चित्रित किया है। युवती नारी के समस्त आंगिक चित्रों की आभा कुशलतापूर्वक प्रस्तुत की है –

''कितना सुन्दर था उसका वेश – श्वेतांक ने कभी ऐसी अनुपम सुन्दरी की कल्पना तक न की थी। चित्रलेखा का यौवन, उन्माद का प्रतिबिम्ब था। उसके अरूण कपोलों पर लाली थी।''[22]

लज्जा नामक मनोवृत्ति नारी के सौन्दर्य में और अधिक चार चाँद लगा देती है। छायावादी कविता और उपन्यासों में इस मनोवृत्ति से परिपूर्ण सौन्दर्य को तुलनीय रूप में प्रस्तुत किया गया है। छायावादी सुप्रसिद्ध कृति ''कामायनी'' में लज्जा मनोवृत्ति के आधार पर सर्ग का ही नामकरण किया गया है। यही लज्जा मनोवृत्ति ही कामयनी में उप नायिका का कार्य भी करती है –

**''मैं रति की प्रतिकृति लज्जा हूँ
मैं शालीनता सिखाती हूँ,
मतवाली सुन्दरता पग में
नूपुर–सी लिपट मनाती हूँ।''[23]**

छायावादी उपन्यास साहित्य में भी नारी के लज्जावान सौन्दर्य को कविता की ही भाँति श्री वृन्दावन लाल वर्मा ने प्रस्तुत किया है –

''बड़ी–बड़ी आँखें, लम्बे–लम्बे पलक, मृदुल तिरछी चितवन उसकी आँखों में समा गई। हेमवती ने भी उसे अच्छी तरह देख लिया, और शर्म से आँखें नीचे कर ली।''[24]

श्री भगवती चरण वर्मा के द्वारा चित्रित किया गया नारी का लज्जा पूर्ण उपन्यासी सौन्दर्य कविता जैसा ही बन पड़ा है –

''हरिणी–की–सी बड़ी–बड़ी सुन्दर आँखों में संकोच था और उसके रसयुक्त अरूण कपोलों में लज्जा थी, यशोधरा का यौवन सुधा और उल्लास का मिश्रण था, उसमें गर्व की उच्छृंखलता थी, उसमें लज्जा की शान्ति थी।''[25]

नर–सौन्दर्य

छायावादी कविता और उपन्यासों में जितना नारी के आकर्षक सौन्दर्य का चित्रण हुआ है उतना नर–सौन्दर्य का चित्रण नहीं हुआ है, परन्तु जब विहंगम दृष्टि डालकर देखते हैं तो पता चलता है कि नर–सौन्दर्य के भी कतिपय चित्र उपन्यासकारों एवं काव्यकारों ने प्रस्तुत किये हैं। छायावादी कविता में नायक मनु के सुगठित सौन्दर्य को महाकवि प्रसाद ने अत्यन्त सुन्दर शब्दों में चित्रित किया है –

**''अवयव की दृढ़ माँस–पेशियाँ,
ऊर्जस्वित था वीयर्य अपार,**

स्फीत शिराएँ, स्वस्थ्य रक्त का

होता था जिनमें संचार।''[26]

मुंशी प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास साहित्य में छायावादी कविता की ही तरह नर के सुगठित शारीरिक सौन्दर्य कौ अति कुशलता के साथ अंकित किया है, नारी के सौन्दर्य की सार्थकता यदि सुकुमारिता में है तो पुरूश के सौन्दर्य की सार्थकता वीरत्व में है, यह वीरत्वमय सौन्दर्य उपन्यास व कविता में तुलनीय रूप में एक सा देखने को मिलता है –

''–– वह अत्यन्त रूपवान, सुगठित, बलिष्ठ युवक था। –––शरीर बहुत सुडौल निकल आया था। छाती चौड़ी, गर्दन तनी हुई, ऐसा जान पड़ता था मानो देह में ईंगुर भरा हुआ है।''[27]

श्री वृन्दावन लाल वर्मा ने भी अपने उपन्यासों में नर के सुगठित सौन्दर्य को कविता की ही भाँति सफलता के साथ चित्रित किया है –

''युवक की आयु बीस वर्ष के लगभग होगी, रंग साँवला था। नाक सीधी जरा लम्बी, माथा ऊँचा और आँखें साधारण, कद न लम्बा न नाटा, शरीर ह्रष्ट–पुष्ट जैसे किसी उद्यान में व्यायाम करके आया हो।''[28]

श्री भगवती चरण वर्मा ने भी नर–सौन्दर्य को अपने उपन्यासों में छायावादी कविता की भाँति सुगठित रूप प्रस्तुत किया है –

''इनका शरीर लम्बा और गठा हुआ, चेहरा सुन्दर, रंग गोरा, मूँछ छोटी–छोटी लेकिन उठी हुई।''[29]

''राम की शक्ति पूजा'' नामक कविता में निराला जी ने नायक राम के शारीरिक सौन्दर्य को सफलता के साथ प्रस्तुत किया है। निराला जी ने अपने उपन्यास में भी नर के बलिष्ठ सौन्दर्य को

अपनी कविता की ही भाँति सटीक रूप में प्रस्तुत किया है।

निराला जी की कविता में नर सौन्दर्य –

''दृढ़ जटा–मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल

फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल

उतरा ज्यों दुर्गम–पर्वत पर नैशान्धकार,

चमकती दूर ताराएँ ज्यों हों कहीं पार।''[30]

निराला जी के उपन्यास – साहित्य में नर सौन्दर्य –

''कलकत्ता–सिटी कॉलेज में वह हिन्दी का प्रोफेसर है। शरीर जैसा ह्रष्ट–पुष्ट, वैसा ही वह सुन्दर बलिष्ठ भी है।''[31]

प्रसाद जी ने अपनी काव्य कृति ''महाराणा का महत्व'' में महाराणा प्रताप की शूर–वीर छवि को ऐसे रूप में प्रस्तुत किया है कि पाठकों की भी भुजायें फड़कने लगती हैं –

''जैसे झपटे सिंह, वही विक्रम लिये

वीर ''प्रताप' दहकता था दावाग्नि–सा

सत्य प्रिये! मैं देख शूर–छवि वीर की

होता था निश्चेष्ट, वाह कैसी प्रथा।''[32]

प्रसाद की उक्त कविता में जो वीरत्वमय सौन्दर्य छलकता है वही सौन्दर्य श्री वष्न्दावन लाल वर्मा के ''गढ़–कुण्डार'' नामक उपन्यास में भी दिखायी पड़ता है –

''मूँगिया रंग के कपड़े पहने हुये, छोटी सी ढाल और तरकस पीठ पर, कमर में तलवार और कंधे पर कमान, गाल पर लगा रोरी का तिलक किसी समय हाथ पड़ जाने से पुछ गया था और माथे पर तिरछी लकीर के आकार में बन गया था। इस वक्र रेखा ने मुख के हल्के गेहुएँ रंग को और भी तेजोमय बना दिया था।''[33]

श्री सियाराम शरण गुप्त की ''मौर्य्य विजय'' नामक काव्यकृति वास्तव में भारत के गौरवमय अतीत का ध्यान दिलाता है। वहीं दूसरी ओर श्री भगवती शरण वर्मा ने भी अपने उपन्यासों में सुडौल एवं बलिश्ठ नवयुवकों को गुप्त जी की कविता की भाँति प्रस्तुत किया है।

छायावादी कविता ''मौर्य्य–विजय में नर–सौन्दर्य –

''थे मानो प्रत्यक्ष इन्द्र वे अवनीतल के,
थे उनके भुज यशः स्तम्भ से अतुलित बल के।
थी विशाल अत्यन्त सुदृढ़तर उनकी छाती,
उज्जवल आँखें दीप्ति सर्वदा थी बरसाती।''[34]

उपन्यास–साहित्य में नर सौन्दर्य –

''और उसके सामने खड़ा था लम्बा ह्रष्ट–पुष्ट, गौरवर्ण का एक वीर, हिमालय की भांति अचल, मेघमाला की भांति गम्भीर, कितना तेजवान, सुन्दर, साहसी और श्रेष्ठ था।''[35]

बाल–सौन्दर्य

बच्चे प्रकृति की सुकुमार रचना है। शिशु किसी का भी क्यों न हो सुन्दर प्रतीत होता है। छायावादी कविता और उपन्यासों में शिशु सौन्दर्य का विस्तारपूर्वक चित्रण तो नहीं हुआ। जितने अल्प चित्र प्रस्तुत किये गये हैं वे निश्चित ही अनुपम हैं।

छायावादी काव्य ''कामायनी'' में भावी शिशु–सौन्दर्य के दर्शन की लालसा वात्सल्यमयी माँ में पूर्व से ही प्रस्तुत की गयी है –

''वह आवेगा मृदु लमजय–सा
लहराता अपने मसृण बाल,
उसके अधरों से फैलेगी
नव मधुमय स्मिति–लतिका–प्रवाल।''[36]

उक्त कविता में बाल–सौन्दर्य के प्रति दर्शन की लालसा गर्भवती माँ में शिशु–जन्म से पूर्व ही प्रदर्शित की गयी है। वह चाहती है कि उसके सौन्दर्य को शीघ्र अति शीघ्र रूप में कब देख पाऊ? उपन्यास–साहित्य में शिशु–सौन्दर्य के दर्शन की लालसा एवं उसे अंक में भरकर अपनी गोद को सुशोभित करने की भावना एक ऐसे शिशु के प्रति प्रदर्शित की गयी है जो बाल–सुलभ क्रीड़ाओं से प्रभावित करता रहता है –

''––––श्यामू खेलने में निमग्न था, कभी हँसता था, कभी उछलता, उसके हाव–भाव

देखकर सुलोचना के रोम–रोम से हर्श टपक रहा था। जितना ही अधिक देखा, उतना ही किसी को छाती से लगा लेने के लिए हृदय अधिक मचलने लगा।''[37]

महाकवि पन्त ने अपनी कविता में शिशु–सौन्दर्य के कतिपय चित्र प्रस्तुत किये हैं, ''शिशु'' नामक कविता इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय है –

''मृदुलता ही है बस आकार।
मधुरिमा–छवि, श्षंगार
न अंगों में है रंग, उभार,
न मृदु उर में उद्‌गार।''[38]

प्रसाद जी ने ''कंकाल'' नामक उपन्यास में बाल–सौन्दर्य को छायावादी कविता की ही तरह सटीक रूप में प्रस्तुत किया है –

''था विजय, बहुत सुन्दर था। परमात्मा के वरदान के समान, शीतल, शान्तिपूर्ण था। हृदय की आकांक्षा के सदृश गर्म, मलय–पवन के समान कोमल सुखद स्पर्श''[39]

प्रसाद जी ने अपने उपन्यास की ही भाँति अपनी कविता में भी बाल–सौन्दर्य को अंकित किया है –

''तुम्हारी आंखों का बचपन,
खेलता था जब अल्हड़ खेल,
अजिर के उर में भरा कुलेल,
धरता था हँस–हँस कर मन,
आर रहे, वह व्यतीत जीवन।''[40]

छायावादी साहित्य सौन्दर्य का महान् पारखी है। इस काल के कवियों और उपन्यासकारों में सौन्दर्य दर्शन की एक तीव्र लालसा देखी जाती है। इस काल के कवि और उपन्यासकार दोनों ही प्रकृति एवं नारी–सौन्दर्य–चित्रण के लोभी रहे हैं, कविता में यह सौन्दर्य प्रकृति के प्रति सबसे अधिक आकर्षित होता है। उपन्यासकारों में यह सौन्दर्य–चित्रण है तो कविता जैसा ही, परन्तु वह प्रकृति में नायिका को आरोपित नहीं करता। वह नारी का सीधे–सीधे चित्रण करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि छायावादी कवि प्रकृति को ही नारी का रूप दे डालता है।

उपन्यासकारों और कवियों में नारी–सौन्दर्य के प्रति निश्चित ही तीव्र लालसा रही है। इस छायावादी साहित्य को नारी–साहित्य की संज्ञा से भी सुशोभित किया जा सकता है क्योंकि नर–सौन्दर्य एवं बाल–सौन्दर्य के चित्र कविता एवं उपन्यासों में नारी–सौन्दर्य की तुलना में कम ही मिलते हैं। अतः हम संक्षेप में कह सकते हैं कि इस काल की कविता और उपन्यास नारी–सौन्दर्य पर ही अधिक रीझे हैं।

परिशिष्ट –

1.श्री जयशंकर प्रसाद, आँसू, पृ0 19
2.श्री जयशंकर प्रसाद, कामायनी, काम, पृ0 72
3.श्री जयशंकर प्रसाद, झरना, पृ0 59

4.आचार्य चतुरसेन, हृदय की परख, पृ0 9
5.महाकवि निराला, राग–विराग, पृ0 46
6.महाकवि निराला, प्रभावती, पृ0 28–102
7.श्री जयशंकर प्रसाद, कामायनी, श्रद्धा, पृ0 56
8.श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, भिखारिणी, पृ0 29
9.श्री जयशंकर प्रसाद, आँसू, पृ0 19
10.श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, भिखारिणी, पृ0 29
11.श्री जयशंकर प्रसाद, कामायनी, श्रद्धा, पृ0 56
12.श्री जयशंकर प्रसाद, आँसू
13.श्री जयशंकर प्रसाद, कंकाल, पृ0 15
14.श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, निरूपमा, पृ0 13
15.सुश्री महादेवी वर्मा, यामा, पृ0 26
16.श्री जयशंकर प्रसाद, कामायनी, आशा, पृ0 50
17.श्री जयशंकर प्रसाद, श्रद्धा, पृ0 57
18.श्री जैनेन्द्र कुमार, सुनीता, पृ0 64
19.श्री सुमित्रानन्दन पन्त, रश्मि बंध, पृ0 41
20.सुश्री महादेवी वर्मा, यामा, पृ0 26
21.श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, भिखारिणी, पृ0 74
22.श्री भगवती चरण वर्मा, चित्रलेखा, पृ0 23
23.श्री जयशंकर प्रसाद, लज्जा, पृ0 109
24.श्री वृन्दावन लाल वर्मा, गढ़–कुण्ड़ार, पृ0 49
25.श्री भगवती चरण वर्मा, चित्रलेखा, पृ0 69
26.श्री जयशंकर प्रसाद, कामायनी, चिन्ता, पृ0 16
27.मुंशी प्रेमचंद, सेवा सदन, पृ0 62
28.श्री वृन्दावन लाल वर्मा, कुण्डली चक्र, पृ0 4
29.श्री भगवती चरण वर्मा, तीन वर्श, पृ0 28
30.श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निाराला, राग–विराग, पृ0 93
31.श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निाराला, अप्सरा, पृ0 19
32.श्री जयशंकर प्रसाद, महाराणा का महत्व, पृ0 17
33.श्री वृन्दावन लाल वर्मा, गढ़–कुण्ड़ार, पृ0 9
34.श्री सियाराम गुप्त, मौर्य विज य, पृ0 40
35.श्री भगवती चरण वर्मा, टेढ़े–मेढ़े रास्ते, पृ0 119
36.श्री जयशंकर प्रसाद, कामायनी, ईर्श्या, पृ0 155

37.श्री विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक, माँ, पृ0 81
38.श्री सुमित्रानन्दन पन्त, रश्मि बंध, शिशु, पृ0 48
39.श्री जयशंकर प्रसाद, कंकाल, पृ0 92
40.श्री जयशंकर प्रसाद, लहर, पृ0 25